International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 14-08-2019; Accepted: 16-09-2019; Published: 19-11-2019
Volume 1; Issue 4; 2019; Page No. 45-46

बौद्ध धर्म की और दलित समाज

J Sajitha
Asst. Professor (Hindi) Sri Ramakrishna College of Arts & Science, Coimbatore, Tamil Nadu, India

प्रस्तावना

इस देश में बौद्ध धर्म की जड़ों को दलित युवकों द्वारा खोज की जा रही है। संपूर्ण तलाशी के उपरांत इस देश में सारे समाज के सामने उभर आयेगी। इसलिए डॉ. अम्बेडकर ने श्रीलंका के प्रथम बौद्ध सम्मेलन में अपने भाषण में कहा था कि, ''भारत में बौद्ध धर्म की जड़े अभी सुखी नहीं है। देखिए भारत की राष्ट्रपति के मुख्य आसन के ऊपर 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय' शब्द अंकित है। भारत के ध्वज पर धर्मचक्र विराजमान है और भारतीय मुद्रा पर अशोक स्तंभ का शिखर है।'' भारतीय हिंदू व्यवस्था ने दलितों के मन–मस्तिष्क पर किस प्रकार का कब्जा कर लिया था, उन्हें यह पता नहीं था कि वे जिंदगी में पलने वाले पशु को भी देवता मान बैठे। क्योंकि हिंदू व्यवस्था के नियमानु सार भगवान की पूजा करनी चाहिए। इसी नियम को लागू करने हेतु दलितों ने गंदे पशुओं को भी नहीं छोड़ा। यह हिंदू की नकल थी। लेकिन उन ब्राह्मणों के भगवान की पूजा करने का अधिकार नहीं था। तमाम उपलब्धियों का डंका पीटते हुए क्या हम यहीं उपलब्धि प्राप्त की है कि आज भारत में अछूतों, आदिवासियों और कमजोर वर्गों को इज्जत और स्वाभिमान पूर्ण जीवन जीने का अधिकार नहीं है।

ईसवीं सन् के 500 वर्ष पहले भगवान बुद्ध ने संसार को करुणा और त्याग का संदेश दिया था जिसके कारण वह विश्व गुरु कहलाये। यही धर्म बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के कारण विश्वधर्म बना। लेकिन भारत में इन के प्रकर इस विश्व धर्म को कुचल दिया गया। इसे जड़ मूल से खत्म करने के लिए बौद्ध भिक्षुओं का सामूहिक रूप से कत्ल किया गया। जिस देश ने विश्व को धर्म ज्ञान और सच्चाई का पाठ पढ़ाया उस देश की ज्ञान की सरिताओं नालंदा और तक्षषिला को नष्ट–भ्रष्ट कर दिया जो बौद्ध भिक्षु बच गये, जितनी पुस्तकें उनसे उठ सकती थी लेकर चीन, जापान, तिब्बत, बर्मा, श्रीलंका आदि देशों में पलायन कर गये। हिंदू धर्म में ग्रंथों में धर्म के ठेकेदारों ने बौद्ध धर्म को नष्ट भ्रष्ट करने के बाद बौद्ध धर्म के लोगों को हिंदुओं में सम्मिलित किया गया। बौद्ध के स्थान पर कृष्णा को स्थापित किया गया। पर आज दलितों के पढ़ें–लिखें लोग इस साजिष को पहचान रहे हैं।

दलित कहानीकार स्वरूपचंद की कहानी 'सुजाता की बेटी' में इस प्रकार की ऐतिहासिक घटना का चित्रण हुआ है। कथा नायक 'प्रशांत' हर रोज अपनी माँ को गाय के दूध से खीर बनाकर भगवान बुद्ध की मूर्ति को खिलाना उसकी समझ में नहीं आता है और माँ भी नहीं जानती है। लेकिन अपने आप यह प्रेम भगवान पर होता है। जब प्रशांत बी.ए. की शिक्षा हेतु इतिहास का अध्ययन करता है, जब उसे इसकी महत्ता का पता चलता है और तुरंत ही अपनी माता का नाम 'सुजाता की बेटी' रख देता है क्योंकि प्रशांत की माँ जिस प्रकार भगवान बुद्ध की मूर्ति को खीर खिलाती है। उसी प्रकार इतिहास की उस पुस्तक में भी एक सुजाता नाम की ग्वालन भगवान बुद्ध की मूर्ति को अपनी गाय के दूध से खीर बना कर खिलाती थी। प्रशांत द्वारा दिए गए नाम पर उसकी माँ को संदेह होता है। तब वह अपने बेटे से इस नाम के देने का कारण पूछती है। तब प्रशांत ने बौद्ध संबंधित ऐतिहासिक घटना को बताते हुए अपनी माँ को संबोधित करते हुए कहा कि तब माँ की, ''तब माँ सारी बिहार की यादव जाति बौद्ध थी, क्योंकि हम सुजाता की विरासत के ही अंग है।'' लेकिन आगे इस बात पर प्रचलित मान्यता के आधार पर अपने मत व्यक्त करते हुए प्रशांत की माँ ने शिशुपाल और जरासंध का वंशज बताती है। तब प्रशांत अपनी भोली माँ को समझाते हुए कहता है कि, ''माँ यह कैसे संभव है? कम से कम कृष्ण हमारा आराध्य नहीं था? क्योंकि हमारे दोनों राजाओं शिशुपाल और जरासंध की उसने छल से मारा या मरवाया था। इस आधार पर तो वह हमारा कट्टर दुष्मन हुआ।

स्पष्ट है कि इस देश में बौद्ध धर्म की जड़ों को दलित युवकों द्वारा खोज की जा रही है। संपूर्ण तलाशी के उपरांत इस देश में सारे समाज के सामने उभर आयेगी। इसलिए डॉ. अम्बेडकर ने श्रीलंका के प्रथम बौद्ध सम्मेलन में अपने भाषण में कहा था कि, ''भारत में बौद्ध धर्म की जड़े अभी सुखी नहीं है। देखिए भारत की राष्ट्रपति के मुख्य आसन के ऊपर 'धर्मचक्र प्रवर्तनाय' शब्द अंकित है। भारत के ध्वज पर धर्मचक्र विराजमान है और भारतीय मुद्रा पर अशोक स्तंभ का शिखर है।

भारतीय हिंदू व्यवस्था ने दलितों के मन–मस्तिष्क पर किस प्रकार का कब्जा कर लिया था, उन्हें यह पता नहीं था कि वे जिंदगी में पलने वाले पशु को भी देवता मान बैठे। क्योंकि हिंदू व्यवस्था के नियमानुसार भगवान की पूजा करनी चाहिए। इसी नियम को लागू करने हेतु दलितों ने गंदे पशुओं को भी नहीं छोड़ा। यह हिंदू की नकल थी। लेकिन उन ब्राह्मणों के भगवान की पूजा करने का अधिकार नहीं था। अगर कोई दलित भगवान के मंदिर में घूस जाता है उसकी हत्या करना भी मामूली सी बात थी। महाराष्ट्र में सबसे प्रसिद्ध मंदिर पंढरपुर का हैं। इसमें विठोबा रुकुमाई की मूर्तियाँ हैं। इस मंदिर में दलित संत चोखा मेला की हत्या कर दी गयी, कारण था कि वह पूजा करने के लिए मंदिर के अंदर घुस गया था। इस मंदिर के दरवाजे अछूतों के लिये सदैव से बंद रहे है।'' परंतु मनुष्य को इज्जत नहीं देती है। मनुष्य को मनुष्य से दूर रहती है। ऐसे धर्म में मनुष्य के लिए स्थान नहीं है। तब तो ऐसे धर्म में रहना व्यर्थ ही माना जाएगा। इसके परिणामस्वरूप देश में अनेक दलित लोगों ने धर्म परिवर्तन के बारे में सोचना आवष्यक समझा।

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर एक हिंदू थे। लेकिन अछूत परिवार में जन्म लिया था। उनका विश्वास था कि जीवन के लिये धर्म आवष्यक है और इसके बिना समाज संचालन भी कठिन है। उनके अनुसार धर्म मानव की सामाजिक थालियों में से है। वे धर्म के तो समर्थक थे किंतु उसके नाम पर विडंबनावाद के विरुद्ध थे। धर्म मानव को क्रियाकलापों को प्रेरणा देता है। इसीलिए उन्होंने मानव को रोटी पर ही नहीं बल्कि उनके मस्तिष्क पर भी आधारित माना था।

मानव मन की शांति और जिजीविशा के लिए उत्साह, साहस और ज्ञान की पिपासा के प्रति जिज्ञासाओं के संकुल और समानता में आस्था रखने वाले धर्म ही मानव जाति के लिए उपयोगी हो सकता है। इसलिए बाबा साहेब डॉक्टर अंबेडकर ने सामाजिक सुधार और मूद्रों को समानता का अधिकार दिलाने के लिए हिंदू समाज से खूब संघर्ष किया था।

लाठियाँ खाई थी, अपमानित हुए थे। इसलिए उन्होंने हिंदू धर्म को माननीय उपयोगी धर्म नहीं माना। उनके विचार अनुसार, ''धर्म का मूल्यांकन सामाजिक मापदंडों से किया जाना चाहिए जैसा सामाजिक आचार विचारों पर आधारित है।'' इस प्रकार भारत भर में अछूतों, आदिवासियों और पिछड़ी जातियों के कमजोर वर्ग पर उच्च वर्गों के लोगों ने अत्याचार को आज़ादी के साठ साल बाद भी जारी रखा है। उनसे मानवी जीवन के प्रति सहानुभूति रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति सोचने पर मज़बूर हो जाता है। तमाम उपलब्धियों का डंका पीटते हुए क्या हम यहीं उपलब्धि प्राप्त की है कि आज भारत में अछूतों, आदिवासियों और कमजोर वर्गों को इज्जत और स्वाभिमान पूर्ण जीवन जीने का अधिकार नहीं है। अछूत और पिछड़ी जातियों के लोग काफी लिख गये है। उनमें कुछ संपन्न भी है और कहीं–कहीं केंद्रीय तथा राज्य प्रशासनों में अधिकारी भी। किंतु ये सब गुण बेकार है। क्योंकि वे अछूत और शूद्र है। उनके प्रति उच्चारणीय लोगों के मन में हेय भावना के अलावा कुछ भी नहीं है। इस ब्राह्मणवादी समाज में डॉ. अंबेडकर जैसे पढ़े–लिखे विद्वान जिन्होंने अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास, राजनीति आदि विशयों का ज्ञान होने पर भी उन्हें शुद्ध, अछूत समझा गया था। इसीलिए अंबेडकर ने, इस पीड़ा से मर्माहत होकर अछूतों को धर्म परिवर्तन की सलाह दी थी।

उन्होंने दलितों से स्पष्ट कहा था कि, ''मनुष्य धर्म के लिए नहीं है, बल्कि धर्म मनुष्य के लिए हैं। मनुष्यत्व प्राप्त करना है तो धर्मांतर करना चाहिए। संसार में सुख से रहना है तो धर्मांतर करो। जो धर्म तुम्हारे मनुष्य को कीमत नहीं देता उस धर्म में तुम क्यों रहते हो? जो धर्म तुम्हें मंदिर में जाने नहीं देता, उस धर्म मेंतुम क्यों रहते हो? जो धर्म तुम्हें शिक्षा प्राप्त नहीं करने देता, उस धर्म में तुम क्यों रहते हो? जो धर्म तुम्हें पानी नहीं पीने देता, उस धर्म में तुम क्यों रहते हो? जो धर्म तुम्हें हर क्षण अपमानित करता है, उस धर्म में तुम क्यों रहते हो? जिस धर्म में मनुष्य को मनुष्यत्व नहीं वह धर्म नहीं एक रोग है।'' जाहिर है डॉ. अंबेडकर हिंदू धर्म के बदले में किसी ऐसे धर्म को स्वीकार करना चाहते थे जो भारतीय हो, जिसमें वर्णभेद तथा छुआछूत न हो, उसमें स्वतंत्रता, समानता तथा भ्रातृत्व भी हो। ये सभी विषेशतायें व मूल्य केवल बौद्ध धर्म में ही परिलक्षित हुए। इसीलिए उन्होंने बौद्ध धर्म को सहर्ष स्वीकार किया था। उनका धर्म परिवर्तन आत्माभिमान तथा आत्मसम्मान, समता एवं बंधुत्व के लिए था। उन्होंने जितना संघर्ष सम्मान तथा मानवीय अधिकारों के लिए किया उतना किसी अन्य विषयों के लिए नहीं। उनकी मान्यता थी कि सम्मानपूर्वक जीना मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है और इसके लिए यथासंभव त्याग करना चाहिए। बाबासाहेब डॉ. अंबेडकर की इसी विचारधारा से आज के दलित युवक प्रभावित है। भारत में बौद्ध धर्म की महत्ता को समझने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकार के दलित युवकों को लेकर हिंदी दलित कहानीकारों ने अपनी कहानियों में चित्रित करने का प्रयास है।

डॉ. स्वरूपचंद्र की कहानी 'हिंदू समरसता' में कथानायक 'किरन' हैं। एक पढ़ा–लिखा दलित युवक है। अपना गाँव 'जादीश दलपूर' को छोड़क रवह अपने मित्रों के साथ दिल्ली जाता है। वह सारे दलित मित्रों के साथ मिलकर मज़दूरी करके कुछ पैसे अपने माता पिता को भेजता है। एक बार उड़ीसा के इस जगदीशपुर गाँव में समुद्री बाढ़ आती है। जिसकी सूचना पाकर गाँव के सवर्ण लोग गाँव को छोड़कर सुरक्षित स्थान पर चले जाते हैं, पर गरीब वहीं रह जाते हैं।

इस घटना की सूचना मिलते ही किरण अपने मित्रों के साथ गाँव आता है। तब सारे गाँव के दलितों की लाशों के साथ अपने परिवार के सदस्यों को भी लाश देखता है और रो–रोकर अपने मित्रों के साथ हाथ बंटाकर सारे गाँव की गंदगी को बड़ी मेहनत के साथ साफ–सुथरा बनाता है। गाँव की सफाई को देखकर सवर्ण लोग पुनर्वास को छोड़कर गाँव में बसने लगते हैं। गाँव में पुनः जाति एवं धर्म संबंधी अलगाँव आरंभ होने लगता है। गाँव के सारे ब्राह्मण मंदिर का पुनर्निर्माण करते हैं। जिस प्रकार मंदिर का निर्माण तुरंत ही किया जाता है, इस प्रकार बाढ़ पीड़ित लोगों की सहायता नहीं की जाती है और बाढ़ आने का कारण ईष्वरीय न्याय पर ताना बाना बुने जाते हैं। एक दिन मंदिर पुजारी की भेंट कथानायक किरण से होती है। तब वह किरण की सेवा को देखकर धन्यवाद देता है और गाँव की सेवा ईष्वर की सेवा के समान मानता है, इस बाढ़ के मैं मौत के शिकार हुए किरण के परिवार के सदस्य के लिए दुःख व्यक्त करता है। इस पाखंड पुजारी की बातों को किरन अच्छी तरह जान लेता है और तुरंत ही उसे उत्तर देते हुए कहता है कि, ''पंडित जी जब मंदिरों के ईष्वर ही अपनी रक्षा नहीं कर पाए तो फिर इंसान की क्या बिसात? लोग तो अपनी गुरु माता तक को मरने के लिए छोड़ कर भाग गए। जिसने उनको वर्शों दूध पिलाया और उनके अंतिम संस्कार पर भी शरीक नहीं हुए। यह काम दलितों ने ही किया।'' आगे किरन जोर देकर कहता है कि, ''हमने इस जन में जन सेवा की उसके फल के लिए हमें अगले जन्म तक इंतज़ार करना पड़ेगा। परंतु भू स्वामियों को सिक्कों के दान का फल अभी मिल रहा हैं यह तो ईष्वरीय धोखा है।''

स्पष्ट रूप से किरण अब इस प्रकार की साजिश को समझ लेता है। ब्राह्मणों द्वारा बनाया गया हिंदू धर्म के प्रति ब्राह्मणों प्रेम है और उस प्रेम को वे हमेशा के लिए कायम करना चाहते हैं, शायद इस धर्म के लोगों की इस करतूत के कारण ही बौद्ध धर्म लुप्त हो गया हो? किरन में इस प्रकार के विचार आने के कारण डॉ. अंबेडकर द्वारा प्रेरित 'बौद्ध पुनर्जागरण' से प्रभावित है।

तभी से उसे ब्राह्मणों की करतूत पर अविष्वास और बौद्ध पुनर्जागरण पहली बार विष्वास होने लगा है कि गढ़ उड़ीसा का बौद्ध गढ़ कैसे ढह गया होगा? इसका कारण उसने हिंदू–बौद्ध का एक दूसरे के विरुद्ध तत्वज्ञान के संघर्ष के कारण मानता है। इसीलिये किरन ने डॉ. अंबेडकर द्वारा स्थापित बौद्ध जागरण को आगे बढ़ाने की आवष्यकता को अपना कर्तव्य मानकर हमेशा के लिए इस कार्य में योगदान देने के लिये स्वीकार करता है और बौद्ध धर्म की पुनर्स्थापना के लिये प्रयासरत हो जाता है। इसके लिए गाँव के सारे दलित युवकों को जागृत के लिए संबोधित करते हुए कहता है, ''भाइयों! जब गंदगी को साफ करने और गाँव के लोगों को दवा दारु की ज़रूरत थी, तब ये उच्च वर्ग भाग खड़ा हुआ। अब पुनः हमारे परिश्रम से स्थापित साफ–सुथरे खेत खलिहानों का मालिक बन बैठा। यह वर्ग अपने पटवारी और पुलिस दारोगा का शासन फिर स्थापित हो गया और उनके डंडे का इस्तेमाल गरीब दलित के खिलाफ खड़ा हो रहा है।''

जाहिर होता है कि भारत में हिंदू धर्म के ब्राह्मणों ने बौद्ध धर्म और उसकी संस्कृति को ध्वस्त कर दिया था। बौद्ध के स्थान पर हिंदू के विभिन्न देवी–देवताओं को स्थापित किया था। हिंदू धर्म के ठेकेदार ब्राह्मणों के शडयंत्र को जानकर दलित युवक अवक हो उठे है और उनके विरोध में कार्य करना आरंभ किया है।

संदर्भ सूची

1. शरणकुमार निबाले–दलित साहित्य कासौंदर्य शास्त्र
2. डॉ. कल्पनागवली–प्रेमचंद तथा शैलेशमारियानी की कहानियों में दलित विमर्ष
3. हरपाल सिंह –दलितसाहित्य की भूमिका
4. डॉ. सी. बालसुब्रहमण्यन –मैत्रेयीपुश्पा–पार्ष्वीकृतों के पैरोकार
5. ओमप्रकाष वाल्मीकि–दलितसाहित्य कासौंदर्य शास्त्र
6. डॉ. बलवंत साधुजाधव–प्रेमचंदसाहित्य में दलित चेतना
7. डॉ. बलवंत साधुजाधव–प्रेमचंदसाहित्य मेंदलितचेतना